Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.shisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2024 SHISRRJ | Volume 7 | Issue 1
ISSN : 2581-6306
doi : https://doi.org/10.32628/SHISRRJ

वैश्विक स्वस्थ जीवन का पर्याय आयुर्वेदशास्त्र

डॉ0 ऋतु शुक्ला
असिस्टेंट प्रोफेसर (संस्कृत)
महाराजा बिजली पासी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, आशियाना, लखनऊ।

Article Info
Publication Issue :
January-February-2024
Volume 7, Issue 1
Page Number : 123-127
Article History
Received : 01 Feb 2024
Published : 15 Feb 2024

शोधसारांश– विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कहा है कि अगले बीस वर्षों में यानी सन् 2020 ई० तक ऐलोपैथी की एन्टीबायटिक दवा मनुष्य के शरीर पर असर करना बन्द कर देगी। यानी शरीर एन्टीबायटिक के प्रति इम्यून हो जायेगा। यह स्थिति आने से पूर्व विश्व को सचेत करना होगा कि तब शरीर को ऐलोपैथी कैसे नीरोग रख पायेगा। इसका एक मात्र उपाय है जड़ी बूटियों का अधिकाधिक उपयोग।

मुख्य शब्द–वैश्विक, स्वस्थ, जीवन, आयुर्वेदशास्त्र, चेतनावृत्ति, कर्मवश, चरक संहिता।

'तदायुर्वेदयतीत्यायुर्वेदः' जो आयु का ज्ञान कराता है उसे आयुर्वेद कहते हैं। आयु का पर्याय चेतनावृत्ति, जीवित, अनुबन्ध एवं धारि है। इस तरह शरीर, इन्द्रिय, मन और आत्मा के संयोग का नाम आयु है। दूसरे शब्दों में शरीर आत्मा का भोगायतन, इन्द्रियाँ भोग का साधन है, मन अन्तःकरण है और आत्मा मोक्ष या ज्ञान प्राप्त करने वाला है। इन चारों का अदृष्ट कर्मवश जो संयोग होता है, वही आयु है। इसी आयु के हित–अहित एवं सुख–दुःख का ज्ञान तथा आयु का मान जिस साधन से भी हो उसे आयुर्वेद कहते हैं।

चरक संहिता आयुर्वेद का प्रमुख ग्रन्थ है। आयुर्वेद एवं संहिता का सम्बन्ध यदि अन्योन्याश्रय कहा जाय तो अतिशयोक्ति न होगी। वेद भी मन्त्र आदि का परिग्रह करने से चिकित्सा सम्बन्धी तथ्यों को कहता है उसमे भी चिकित्सा आयु के हित के लिए कही गयी है, अतः वेद को भी आयुर्वेद कहा जाता है।

महर्षि कश्यप का तर्क है कि जिस प्रकार हाथ में चार–अंगुलियाँ और पाँचवाँ अँगूठा है और वह एक ही हाथ में रहता हुआ भी नाम और रूप से भिन्न है और वह सब अँगुलियों पर शासन करता है उसी प्रकार चारों वेदों के साथ रहता हुआ पाँचवा आयुर्वेद सब में मुख्य है। यही नहीं कुछ लोगों का कहना है कि आयुर्वेद के ज्ञान का प्रारम्भ सृष्टि से पूर्व हुआ। जिस प्रकार शिशु के उत्पन्न होने से पूर्व माता के स्तनों में दूध आ जाता है उसी प्रकार सृष्टि के उत्पन्न होने से पूर्व परमात्मा ने जीविका के लिये जो साधन बनाये उनमें आयुर्वेद भी एक था। वह प्राचीन और शाश्वत है। जिस प्रकार अग्नि में उष्णता जल में द्रवता स्वभाव से होती है, उसी तरह आयुर्वेद के लक्षण स्वभाव सिद्ध होने से नित्य है।

ऋग्वेद में आयु से सम्बन्धित मन्त्र ऋग्वेद मे कतिपय आयुर्वेद के आचार्यों जैसे– दिवोदास, भरद्वाज की भी चर्चा है। यजुर्वेद में बहुत से मन्त्र आये हैं, जिनमें औषधियों की चर्चा स्वास्थ्य के प्रसंग में हुई है। आयुर्वेद की सर्वाधिक चर्चा अथर्ववेद में प्राप्त होती है। उसमें वनस्पतियों का नामोल्लेख, कृमि सम्बन्धी वर्णन, शल्य चिकित्सा एवं प्रसूति सम्बन्धी विवरण मिलता है।

Copyright © 2024 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)** which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

ब्रहावैवर्त पुराण में उल्लेख मिलता है कि आयुर्वेद की उत्पत्ति प्रजापति से है। प्रजापति ने ऋक्, यजु, साम और अथर्ववेद का मन्थन करके आयुर्वेद बनाया। यह पाँचवा वेद उन्होंने भास्कर को दिया। भास्कर ने स्वतंत्र संहिता बनाकर इसे अपने शिष्यों को जिनमें धन्वन्तरि, दिवोदास, काशिराज, अश्विनी, नकुल, सहदेव, अर्को, च्यवन, जनक, बुध, जाबाल, जाजलि, पैल, करथ तथा अगस्त्य प्रमुख थे, पढ़ाया। ये सभी 16 शिष्ट वेद वेदांग को जानने वाले, रोगों का नाश करने में निपुण थे।

आयुर्वेद आयु के विज्ञान का नाम है। आयुर्वेद के मौलिक सिद्धान्त पंचमहाभूत, विदोष, रस, गुणा, वीर्य विपाक आदि सभी का आधार विज्ञान है। सहस्रों वर्ष पूर्व द्रव्यों के गुणों का जो निर्धारण किया गया वह आज भी प्रत्यक्ष है। इसी आधार पर चिकित्सा या स्वास्थ्य संवर्धन में उन द्रव्यों का प्रयोग सफलता के साथ किया जा रहा है। इसीलिये आयुर्वेद विज्ञान सार्वभौमिक, सार्वदेशिक एवं सार्वकालिक है। आयुर्वेद के सिद्धान्त सुदृढ़ सत्य और अपरिवर्तनीय है। अतः इनकी वैज्ञानिकता स्वयं प्रकाशित है। आयुर्वेद मानव की सम्पूर्ण समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करने वाला विज्ञान है। दुःख की आत्यन्तिक निवृत्ति के लिये इसमें नैप्तिकी चिकित्सा का विशद वर्णन है। इसलिये यह शरीर कोई क्षुद्र वस्तु नहीं है यह पुण्यराशि के पण्य (धन) से क्रीत (खरीदी गई) एक विशाल नौका है, जिसे सुचारु रूप से संचालित कर शवबाधा के विस्तीर्ण जाल– जंजाल को पार किया जा सकता है। इसलिये आयुर्वेद ऐहलौकिक और पारलौकिक उभयविध निःश्रेयस् का साधक शास्त्र है।

सुश्रुत, चरक, कश्यप तथा अन्य आचार्यों ने आयुर्वेद को अथर्ववेद का उपवेद माना है। आयुर्वेद ही पुण्यतम वेद कहा गया है। अन्य वेद केवल परलोक हितकर है, जबकि आयुर्वेद दोनों लोकों के लिए हितकर है। जीवन (आयु) से सम्बन्धित प्रत्येक ज्ञान आयुर्वेद की सीमा में आता है। आयुर्वेद विज्ञान सार्वभौम होने के कारण किसी एक वर्ग के अधिकार में नही आता है। इसीलिये सम्पूर्ण विश्व में अहर्निश गवेषणा हो रही है।

बदलते परिवेश में यूनानी चिकित्सा के स्पर्धा युग में चोपचीनी, पारसी, यवानी आदि अनेक यूनानी द्रव्यों का प्रयोग करना वैद्यों ने प्रारम्भ कर दिया है।

आयुर्वेद के मनीषी विद्वानों ने कभी भी संकुचित दृष्टिकोण नहीं अपनाया। उन्होनें ज्ञान के संवर्धन तथा ऊहापोह तर्क–वितर्क के लिए सदैव प्रेरणा दी है। औषधि वही श्रेष्ठ है, जिससे आरोग्य लाभ हो और वही चिकित्सक श्रेष्ठ है जो रोगी को रोग मुक्त करे। आचार्य त्चरक के इन विचारों में रंचमात्र भी रूढ़िवादिता, पक्षपात की भावना नहीं।

आयुर्वेद मात्र चिकित्साशास्त्र नहीं है अपितु एक दर्शन है। जो स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य का संरक्षण और रुग्ण व्यक्ति के रोग की मुक्ति तो करता है। सांसारिक सर्वोच्च सुख एवं पारमार्थिक सर्वोच्च आनन्द की उपलब्धि के लिए निर्भान्त मार्ग दर्शन भी करता है। आयुर्वेद अपार है इसलिये सावधानी के साथ इसके ज्ञान के लिए सन्नद्ध रहना चाहिए।

आयु और वेद इन दोनों शब्दों की व्याख्या के पश्चात् सुगमता से आयुर्वेद शब्द का अर्थ बुद्धिगम्य हो जाता है अर्थात् जिस शास्त्र में आयु का अस्तित्व हो, जिससे आयु का ज्ञान हो, जिसमें आयु सम्बन्धी विचार हो और जिससे आयु की प्राप्ति हो उस शास्त्र को आयुर्वेद ही कहा जा सकता है।

आयुर्वेद में स्वस्थ व्यक्ति का लक्षण बताया गया है कि जिसका वात, पित्त, क़फ जब साम्यावस्था में हो, अग्नि सम हो, धातु (रस, रक्त, माँस, अस्थि, मज्जा, शुक्र) सम अवस्था में हों, मल, मूत्र, आर्तव अबाध रूप से उत्सर्जित होते हों, शरीर में सभी क्रियायें समान रूप से होती हों, इसके साथ आत्मा, इन्द्रिय और मन प्रसन्न हो उसे स्वस्थ कहते हैं।

त्रिकालज्ञ आप्त महर्षियों ने आयुर्वेद आदि अनेक शाखाओं का विस्तार किया। आयुर्वेद मानवायुर्वेद, वृक्षायुर्वेद, पश्वायुर्वेद आदि अनेक शाखाओं में विस्तीर्ण है। जिन सबका मूल्यांकन एक स्वतंत्र विषय है। अपरिमित, अगाध ज्ञान निधि के रूप में आयुर्वेद की जीवनदायिनी धारा का स्रोत सृष्टि के आदि से प्रवाहित है। जिसके शीतल, स्निग्ध, अमृत निःस्पन्द में अवगाहन कर आजीवन आरोग्य और सुन्दर स्वास्थ्य का वरदान प्राप्त किया जा सकता है।

सुश्रुत संहिता में वर्णित है कि ब्रह्मा ने मनुष्य की सृष्टि से पहले ही आयुर्वेद का एक ग्रन्थ बनाया जिसमें एक लाख श्लोक एवं एक हजार अध्याय थे। ब्रह्मा ने मनुष्यों की आयु तथा बुद्धि की अल्पता का विचार कर आयुर्वेद को आठ अंगो में विभक्त कर दिया जैसे– 1. शल्य, 2. शालाक्य 3. काय चिकित्सा 4. भूतविद्या 5. कौमार भृत्य 6. अंगद तन्त्र 7. रसायन तन्त्र 8. वशीकरण।

आयुर्वेद विज्ञान होने के कारण विश्व में अपनी धाक बनाये हुए है। विदेशों में भी इस चिकित्साशास्त्र पर अनेकानेक शोध और गवेषणायें चल रहीं हैं। इससे इसकी सार्वभौमिकता तथा भूमंडलीकरण एवं वैश्वीकरण के प्रमाण स्वतः सिद्ध हैं।

सुमेरिया, बेबीलोनिया तथा असीरिया आदि प्राचीन देशों की सभ्यता भारतीय सभ्यता के अत्यन्त निकट होने से कहीं–कहीं चिकित्सा सम्बन्धी विषयों तथा शब्दों में भी समानता परिलक्षित होती है।

चीन देश के साढ़े चार हजार वर्ष प्राचीन ग्रन्थ में ज्वर के दस हजार भेद, आमाशय के चौदह भागों का निर्देश, नाड़ी परीक्षा का विशेष विधान रोगों आदि विषयों का वर्णन है। चीनी–चिकित्सा ग्रन्थों में आर्द्रक, दाड़िममूल, वत्सनाम, गन्धक, पारद एवं अनगिनत वृक्षों के पत्र एवं मूल आदि का औषधि के रूप में उल्लेख किया गया है। चिकित्साशास्त्र के इतिहास के रचयिता 'ग्यारिसन' के अनुसार चीन देश वालों ने चिकित्साज्ञान को भारत से पाया।

भारत ईरान का निकट सम्बन्ध होने के कारण ईरान के प्राचीनतम मूल ग्रन्थ जेन्दावेस्ता के चार भागों में से वेन्दिदाद नामक भाग में चिकित्सा विज्ञान सम्बन्धी विषय दिये गये हैं। 1881 में कम्बुज के राजा जयवर्मन द्वितीय ने अपने काल में अनेक आयुर्वेदिक चिकित्सालयों में 102 चिकित्सकों की नियुक्ति की थी। जावा के केन्द्रीय शासन में जनता के स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सेवा हेतु स्वास्थ्य विभाग कार्यरत था।

थाईलैण्ड के चिकित्सक अपनी चिकित्सा के प्रवर्तक आचार्य 'कुमारमच्च' को जीवक (वैद्य) का पर्याय मानते हैं। थाई भाषा में चिकित्सा विषयक एक पत्रिका 'वैद्यकर्म सन्देश' के प्रकाशन से थाई देश की चिकित्सा पर आयुर्वेद का पूरा प्रभाव प्रतीत होता है।

कम्बुज, चम्पा, मलयेशिया, इण्डोनेशिया, जावा, सुमात्रा, मारीशस द्वीप में उपलब्ध वनस्पतियों का भी घरेलू दवाओं के रूप में उपयोग करते रहे हैं। चीनी वैद्य "तन–मो–सिन" के पुस्तकालय में आयुर्वेद के बहुत से महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ हैं। श्रीलंका में आयुर्वेद चिकित्सा के लिए चूर्ण, क्वाथ और अरिष्ट का प्रयोग किया जाता है। लंका के वैद्य सम्मेलन में भारतीय वैद्यों को आयुर्वेद चक्रवर्ती की सम्मानित उपाधि से समादृत किया है। बर्मा भाषा में अठारहवीं शती में सुश्रुत तथा अन्य आयुर्वेदीय ग्रन्थों के अनुवाद हो जाने से सभी लोगों का आयुर्वेद के प्रति आकर्षण बढ़ रहा है।

नेपाल में प्राचीन काल से आयुर्वेद चिकित्सा को साधन माना जाता रहा है। काठमाण्डू स्थित 'सिदरवार' का 'वैद्यखाना' प्राचीन काल से सेवा कर रहा है। कोयलावास ग्राम में जड़ी बूटियों का विशाल व्यापारिक केन्द्र है, जहाँ से तेजपाल, कायफल, रीठा, सुगन्धवाला, दालचीनी, शतावर, चिरायता एवं सर्पगन्धा आदि काष्ठौषधियाँ हजारों क्विंटल की मात्रा में खरीदी तथा बेची जाती हैं।

तिब्बत में आयुर्वेद के विकास के लिए क्षेत्र विस्तार की महती संभावना है। ग्रीस देश के चिकित्सा विज्ञान का मूल स्रोत मिस्र है। बालीद्वीप में ऐसी मान्यता है कि आयुर्वेदीय जड़ी बूटियों से सम्बन्धित ग्रन्थ के रचयिता स्वयं गणेश जी है और 'प्रमानतरू' नाम से विशाल ग्रन्थ बन गया।

इसके अतिरिक्त चीन, थाईलैण्ड, तिब्बत आदि में आयुर्वेद अथवा देशी चिकित्सा पद्धति बहुत लोकप्रिय हैं। सिंगापुर, मलयेशिया आदि में चीन वैद्यों के माध्यम से चीनी चिकित्सा पद्धति बहुत लोकप्रिय है। हमारे देश में ऋग्वेद से पता चलता है कि आर्य मनीषी प्राचीनकाल में 'सोम' नामक पौधे का उपयोग औषधि के रूप में करते थे।

जड़ी बूटियों के विदेशी शोधकर्ता ने सदा से ही जंगल में रहकर प्राकृतिक औषधियों से चिकित्सा कर रहे व्यक्तियों का सम्मान दिया है। ब्रिटिश विशेषज्ञ अपनी पुस्तक में लिखते हैं कि यदि भारतीय जडी–बूटियों के विषय में जानकारी चाहिये तो आपको जंगल से जुड़े लोगों पर विश्वास करना होगा और इनके अन्वेषण में घने जंगलों और ऊँचे पहाड़ों पर चढ़ना होगा।

विश्व में जड़ी बूटियों से निर्मित औषधियों का प्रचलन जोरों पर है। नवीनतम् आकलन के अनुसार वर्तमान में विश्व में लगभग 3 लाख कर।ड़ रूपये की जड़ी बूटियों से बनी औषधियों की बिक्री हो रही है। जड़ी–बूटी के क्षेत्र में विश्व की प्रमुख कम्पनियाँ प्राकृतिक रूप से सम्पन्न भारत को आधार बनाना चाह रही है। जडी–बूटियों के चमत्कारिक' औषधीय प्रभावों को वैज्ञानिक धरातल पर जाँचा परखा जा चुका है।

महानगरों का सम्पन्न वर्ग भी ऐलोपैथिक दवाओं के दुष्प्रभावों से घबराकर आयुर्वेद की ओर लौटने लगा है। विश्व में ऐलोपैथिक दवाओं के स्थान पर वैकल्पिक जड़ी–बूटियों की परम्परागत दवाओं की तरफ लोगों का झुकाव बढ़ने लगा है। अनेक कम्पनियों ने जड़ी–बूटी (हर्बल) सौन्दर्य प्रसाधनों के उत्पादनों को बाजार में उतारा है। भारत में औषधीय पौधे, वृक्ष–उत्पादों का निर्यात भी जोर पकड़ रहा है। वर्तमान में 436 करोड़ रूपयों के औषधीय पौधों का निर्यात हो रहा है इसके निर्यात में सौ गुना तक वृद्धि होने की संभावना है।

बीसवीं शती के वैज्ञानिकों ने यह खोज निकाला है कि केवल पीपल ही ऐसा वृक्ष है जो रात दिन आक्सीजन छोड़ता है। तुलसी के पौधे के सभी भाग यानी जड़, फूल, फल, पत्ती तथा डंठल आदि का औषधीय महत्त्व है। जितने भी टूथपेस्ट बाजार में उपलब्ध हैं उन सभी में नाना प्रकार की जड़ी–बूटी का समावेश है। भारतवर्ष में जहरीले आकले पौधे से फोड़े फुन्सी का उपचार किया जाता है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कहा है कि अगले बीस वर्षों में यानी सन् 2020 ई० तक ऐलोपैथी की एन्टीबायटिक दवा मनुष्य के शरीर पर असर करना बन्द कर देगी। यानी शरीर एन्टीबायटिक के प्रति इम्यून हो जायेगा। यह स्थिति आने से पूर्व विश्व को सचेत करना होगा कि तब शरीर को ऐलोपैथी कैसे नीरोग रख पायेगा। इसका एक मात्र उपाय है जड़ी बूटियों का अधिकाधिक उपयोग।

सरकार को जड़ी बूटियों के उत्पादन, संरक्षण, द्रव्य के सही रूप में उपयोग हेतु फ्रीज–ड्राइंग तकनीकी को विकसित करने की परम आवश्यकता है। चीन जड़ी बूटियों के निर्यात से 22 हजार करोड़ रूपये तथा थाईलैण्ड 10 हजार करोड़ रूपये की विदेशी मुद्रा अर्जित कर रहा है निर्यात के इन आकड़ों के सामने हमारा निर्यात नगण्य है। यदि हमने ध्यान नहीं दिया तो हमारी जड़ी बूटियाँ विदेशों से निर्मित होकर हमारे ही देश में आयेंगी और हमें ऊँचें मूल्यों में खरीदने के लिए विवश होना पड़ेगा। यदि ऐसा हुआ तो यह हमारा घोर निन्दनीय अपराध होगा और भावी पीढ़ी कभी हमें क्षमा नही करेगी। भविष्य में स्वस्थ रहने का विकल्प केवल जड़ी–बूटियों के अधिकाधिक सेवन में ही निहित है।

सन्दर्भ

1. सुश्रुत संहिता
2. चरक संहिता
3. ऋग्वेद
4. यजुर्वेद
5. सामवेद
6. अथर्ववेद
7. ब्रह्मवैवर्त पुराण